**Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,**
***Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2016 = 4.44, www.srjis.com***
*UGC Approved Sr. No.48612, OCT- NOV 2017, VOL- 4/24*

# प्रो0 रमानाथ झाक आलोचना-रीति : पाश्चात्य ओ भारतीय संदर्भ मे

**Neelam Kumari, Ph. D.**

*Abstract*

*आचार्य रमानाथ झाजी कोनो रचनाकारक रचनाके आलोचनाक "रीति" पर कसलिंह | पाश्चात्य ओ पौर्वात्य दुहू प्रकारक अलोचकक विचारके ह्द्यन्म कए अपन निष्पक्ष निर्णय मैथिली-आलोचनासाहित्यक प्रणयनमे देल | हिनक मत रहल जे समीकक्षकके सर्वथा गुण-दोषसं अभिज्ञ होएबाक, आलोचना करबासं पूर्व विषयवस्तुक गंभीर अध्ययन होएबाक चाहि, अन्यथा आलोचना एकपक्षीय भए जाएत | पूर्वग्रहग्रस्त होएबाक स्थिति अलोचकक हितमे बाधक होइछ | "स्तुति" वा "निंदा"क अभिधा नहि लगैक आलोचक पर ताहि पर विचार करब परमावश्यक थीक | रमानाथ बाबू सन उच्च कोटिक अलोचकक ई विचार निश्चित रूपे शिरोधार्य करबाक थीक, तखने स्वस्थ आलोचना कोनो विधाविशेषक भए सकैछ |*

***Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com***

## रीति-विवेचन :

प्रो0 रमानाथ झाजी निर्विवादरूपे एक अत्युच्च कोटिक आलोचक छलाह जे निर्भीकता संग नवीन ओ आधुनिक काव्यके आलोचनाक कसौटी पर कसलइन्ह | पाश्चात्य ओ प्राच्य दुहु काव्य रीतिक प्रतिपादनमे हिनक आलोचकीय द्रिष्टिक परिलक्षित-प्रतिविम्बित होइछ |

सामान्य रूपे रीतिक तात्पर्य होइछ पद्धयति, तौर-तरीका, रेवाज आदि | आचार्यक आलोचकीय शैलिक सेहो अपन रीति छल, जे हिनक प्रमुख वैशिष्ट्य छल

## आलोचनाक व्याख्या :

प्रो0 उमानाथ झाजी "मैथिलीक आलोचना साहित्य" नामसे प्रकाशित अपन निबंधमे लिखने छथि- "हिंदीक समान मैथिली मे "आलोचना" वा "समालोचना" शब्द अंग्रेजी क "क्रिटिसिज्म"क हेतु "विवेचना" शब्दक प्रयोग उचित | कारण जाहि यूनानी धातुसं ई शब्द बनल ओकर अर्थ होइत अछि- निर्णय करब | ते "क्रिटिसिज्म" क "क्रिटिक" भेलाह निर्णायक, "क्रिटिसिज्म" भेल हुनक व्यापार, अंग्रेजी मे "क्रिटिक" शब्द सर्वप्रथम ओहि व्यक्तिक हेतु प्रयुक्त भेल जे लेखक कार्य वा उक्तिक गुण-दोषक विवेचन करैत छलाह | तदुपरांत छिद्रान्वेषी हेतु सेहो ई शब्द व्यवहृत होइल लागत | सोलहम शताब्दिक आदि सं "क्रिटिक" शब्द साहित्यक तथा विवेचक हेतु प्रयोगमे आएल | ते क्रिटिकक प्रधान कार्य भेलिंह मोल्यांकन |"

कोनो वस्तुके नीक जकाँ देखब ओकर आलोचना भेल | जकरा अंग्रेजीक "रिव्यु"क प्रयायवाची बूझल जा सकैछ | तहिना "समीक्षा" अंग्रेजीक "स्कुटिनी"क सन्निकट अछि | ई दुनू शब्द "विवेचना"सं अधिक प्रचलित अछि | भारतीय परंपरा पर दृष्टिपात करैत एकरा स्वाभाविके कहब अपेक्षित थीक | कारण, प्राचीन टीकाकरण लोकनि मूल्यांकन अपेक्षा अर्थ-घोतनके प्रधानता दैत छलाह | ते सूत्र पर "वात्तिर्क" किवा "भाष्य"क प्रणयन भेल तथा जाहि

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

ग्रंथमे कोनो शास्त्रीय विषयक गवेषणा रहल ओकरा कोमुद्रा, प्रकाश, चन्द्रिका तथा आलोक आदि संज्ञासे कएल गेल |

आलोचना कोनो भाषामे सर्जनात्मक साहित्यक पर्वत्ती होइछ | कोनो भाषा तथा व्याकरणमे जेना पूर्वापर सम्बन्ध रहैत छैक तहिना काव्य ओ अलोचनामे | अस्तु काव्यक अभावमे आलोचनाक कल्पना करब निरर्थक | मैथिली साहित्यक किछु इतिहासकार लोकनि भनहि मैथिली साहित्यक प्राचीनता सिद्ध करबाक हेतु मैथिली साहित्यके सहस्त्रो वर्ष प्राचीन सिद्ध किए लेथि, मुद्रा वस्तुस्थिति तं इएछ अछि जे विद्यापति सएह हमरा लोकनिक प्रथम साहित्यक कवि भेलाह | संगहि विद्यापतिक पश्चात पाँच छओ सए वर्ष धरि मैथिली साहित्य संस्कृत पंडित लोकनिक संरक्षणमे रहि विकसित होइत रहल | एहि अवधिमे मैथिली साहित्यक प्रसंग आलोचनाक ग्रंथ लिखल जएबाक कोनो प्रयोजने नहि बूझल गेल | संस्कृत पंडित लोकीन जनसामान्य मनोरंजक हेतु मैथिली भाषामे गीत लेखथि ओ ओहि पर अनुशाशन रहैत छल कव्यशास्त्र्क | आ ई प्रक्रिया तावत पर्यंत चलैत रहल यावत धरि मैथिली अध्यापन व्यवस्था विश्वविध्यालयीय स्तर प्र नहि भेल | हं, एहिसँ पूर्व निबंध लिखल जाइत रहल | सेहो मैथिलीक पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक पश्चात लखन मैथिली मे गद्य-साहित्य स्रजनक हेतु अनुकूल अवसर भेलैक ओ ई अनुभव कएल जाए लागल जे गद्यक अभावमे साहित्यक विकासक गति अवरुद्ध भेल जा रहल अछि | "काव्यादर्श"क रचनाक हेतु काव्यक सम्रद्ध परम्पराक होएब अनिवार्य | ई विषय यूनानी दार्शनिक अरस्तुक काव्य-शाश्त्रसं लए दंडीक "काव्यादर्श" धरि सं समर्थित अछि | अतएव मैथिलीक पांच छओ सए वर्षक काव्य-रचना जं संस्कृत काव्य-शास्त्रक नियमक अनुसरण करैत रहल तं हि एहिमे आश्चर्ये कोण ?"

**पाश्चात्य आलोचना :**

पश्चिमक सभसं पहिल साहित्याचार्य प्लेटो भेलाह | ओ साहित्यक अध्यन साहित्यक दृष्टिसं कएने छलाह | एहि प्रकारे ईसा से तीन शताब्दी पूर्वहि यूनानमे साहित्य ओ काव्य व्यवस्थित अध्यन प्रारम्भ भए गेल छल | प्लेटोक शिष्य अरस्तु ओहि साहित्यालोचनके आगां बढ़ओलन्ही | प्लेटोके "रिपब्लिक" नामक ग्रंथक एक अंग छल साहित्यालोचन ओ विवेचन | किन्तु अरस्तु एहि विषय पर एक स्वतन्त्र ग्रंथे लिख्लिंह | पश्चात एहि दुनू विद्वानक कृतित्त्व पर सेहो पर्वत्ती साहित्यकारक टीका-टिप्पणी चलल | अलोचकगन संवेदनशील भए उठलाह | ईसाक तृतीय शताब्दीमे लाड गीनस नामक नीक विवेचन भेलाह जे "द सब्लाइम" नामक प्रसिद्ध प्रबंध लिखलिन्ह, किन्तु ओ प्राय: प्लेटो ओ अरस्तूक काव्य एंव कला-सम्बन्धी विचारके एतेक व्यापकता संग नहि परखलन्ही, अर्थात पश्चमी आलोचनाक प्राचीन रूप सार-रूप सं एहि दुनू विद्वानक निबंधादी मे समाहित अछि | अस्तु, आधुनिक कलाके प्रारंभ करबासं पूर्व अपेक्षित थीक प्लेटो एंव अरस्तु सं महान विदानक विचार-सूत्रके ग्रहण करब |

प्लेटो कला ओ सत्यक मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कएने छथि | संगहि सत्य सेहो | आधुनिक कवि-सत्य किंवा आदर्श-सत्यक अर्थहि मे नहि प्रयुत अपन समस्त रूपमे कलाक लक्ष्य होएबाक चाही | एहि प्रकारे सत्यसं सदाचार एंव नीतिक अर्थ लए प्लेटो कहलिन्ह जे कलाकार वा कविके सत्पुरुष होएबाक चाहि | कलाक सत अथवा असत भेला सं समाज नीक वा अधलाह होइछ | अतएव प्लेटोक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत ई भेल जे कला अथवा काव्यक

कसौटी ई अछि जे ओकरा द्वारा जे किन्तु प्रतिपादित किंवा अभिव्यक्त भेल अछि ओ यथार्थ थीक-अपन आधारभूत प्राक्रतिक सत्यसं तालमेल रखैत अछि | अर्थात काव्यक अर्थ लौकिक अर्थक प्रतिरूप होएबाक चाहि | दुनूमे तात्विक विरोध नहि होएबाक चाहि |"

एहि प्रकारे प्लेटो यथार्थवाद पर बल देलिन्ह आ हुनक समालोचना- पद्द्यति आदर्शवादी खल जाइछ, कारण ओ यथार्थर्क निसंद्देह समक्ष कला ओ काव्यक परीक्षण करैत छलाह | एहिसँ प्लेटोक प्रसिद्द आदर्शवादी रूपमे भेल |

प्लेटोक शिष्य अरस्तु यथाथवादी प्रणाली के अपनाओल, हुनका समक्ष जे साहित्यक सामग्री प्रस्तुत छल ओकरा आधार बनाए साहित्यक विवेचना कएल | ओ यथार्थ: काव्यके ललितकला मानलिंह | जतए प्लेटो काव्यके सत्यक प्रतिमा मानने छलाह ओत्तहि अरस्तु ओकरा "अनुकृति" मसनलिन्ह आ कला एंव विज्ञानक भेद बताए काव्य साहित्य तथा सामान्य साहित्यक भेद कएलिन्ह | अरस्तु कहलिंह जे काव्य-साहित्यमे विशेष घटना किंवा स्थूल सत्हिक नहि, अपितु सामान्य घटना आ सुक्ष्मत्र सत्यक प्रतिपादन सेहो होइत अछि | एहि प्रकारे अरस्तु वएह बात कहलिंह जे आधुनिक अलोचकक एहि कथनमे समाविष्ट अछि जे आदर्शीकरण कलाकारक चित्तक अनुपम प्रक्रिया थीक | रसवादी लोकनिक सधारनणीकरणक झांकी दर्शन सेहो एतए बेरि भए जाइछ | किन्तु एतबा स्म्रत्व्य थीक, जे आदर्शीकरण ओ साधारणीकरण वला आत्मपक्षक प्रधानता दैत छथि, परंच अरस्तु विषय ओ कथावस्तुए केर प्रधानता देलिंह | यद्यपि ओ मानैत छलाह जे अनुकारक कविक प्रस्तुत कएल अनुकृति एंव अनुकार्यक समानताक अनुभव सएह काव्यानन्द थीक, तथापि ओ काव्यक आत्मा वस्तुएके मानैत छलाह
एही सं ओ सुषमा पर साहित्य-समलोचनामे अधिक जोर देलिंह | प्लेटो पूर्ण सत्याहिके काव्यक कसौटी मानने छलाह किन्तु अरस्तु रूपविधानक पूर्णता अथवा सुषमाके कलात्मक गुणक परख मानलिन्ह | आधुनिक आलोचनाक शुभारम्भ अरस्तूक इएह सुषमावाद किंवा रीतिवाद सं भेल, कारण अरस्तु वस्तु, चरित्र, भाव ओ भाषा आदिक शास्त्रीय नियम बनाए पक्ष-प्रदर्शन करा देने छलाह |

अर्वाचीन कालमे एडीसन आलोचनाक क्षेत्रमे कल्पनाक प्रतिपादन कएल | ओ कहलिन्ह जे कल्पना पर प्रभाव देबाक शक्ति सएह काव्य एंव कला केर प्राण थीक | ओ मनोविज्ञान आधार पर कल्पना एंव कल्पनाक सुखक वर्णन कएल | एहि कालमे सत्य, सुषमा एंव कल्पनाक आधार पर आलोचनाक तीनि गोट तत्त्व स्थिर भेल –

1. वस्तु,
2. रीति, एंव
3. सुखानुभूति करएबाक योग्यता |

कल्पना ओ सुखानुभूति वला तत्त्व सएह आधुनिक आलोचनाक वैशिष्टय थीक | पांछां चलि क एहि कल्पनाक स्वरुप-निर्णय कतोक आलोचक कएल, मुद्रा कल्पनाक प्रभुत्व सभ गोटे स्वीकार कएल |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

एतदतिरिक्त मैथ्यू आरनाल्ड, वर्सफोल्ड, अबरक्रांबी, रिचर्ड्स आदिक कर्तिक विवेचन कएलासं आधुनिक समालोचनाक रूप ठाढ भए सकैछ | मुख्य रूपसं समालोचनाक इएह उपरवर्णित तीन तत्त्व थीक आ रही आधार पर कोनो रचनाक आलोचना कएल जाइछ | परंच ध्यातव्य थीक जे वर्तमान कालमे रूढ़ नियमक अपेक्षा व्यापक सिद्धान्तके समालोचनाक आधार बनाओल गेल अछि | समालोचना केर बंधन कर्पी गेल अछि आ व्यक्ति-वैचित्रय ओ निजी रूचिक सेहो समुचित विचार कएल जाइछ | एकहि क्रति कोनो सह्रदयके प्रिय होइछ आ कोनो दोसराक लेल अप्रिय |

पाश्चात्य समलोचकक प्रकाशमय दिगदर्शन होइछ हुनक "लेबोरटरी एक्सपेरिमेंट लिस्ट"क रूपमे जे नाना प्रकारक समीक्षात्मक सिद्धांत आ प्रणालीक रुपी यंत्रसं पाठकके देखबैत छथि जे कोनो साहित्यक रचना-प्रक्रियामे कोन-कोन ज्ञान-पदार्थक मिश्रण होइछ आ ओकर की प्रभाव होइछ | हिंदी-साहित्यक समीक्षा-प्रणाली मे पाश्चात्य समीक्षा प्रणालिक विशिष्ट प्रभाव देखबा मे आबि रहल अछि | एकर महत्ता एहिसँ ज्ञात भए जाइछ जे ओ अपन देशक सीमाके लोघी दोसर देशक जिज्ञासु पाठक लोकनिक मानस-मंथन कए रहल अछि | पाश्चात्य-समीक्षाक मूल्यांकन करबा काल आधुनिकताक अर्थ स्मरण राखब आवश्यक | आधुनिक शब्दक अर्थ सं ई स्पष्ट होइछ जे आधुनिकता कोनो देश वा युगक वर्तमान परिस्थिति आ आस्थाके स्वीकार कए ओकर अनुसार वैयक्तिक जीवनमे कार्य-सम्पादन करबाक एकाग्र प्रवत्ति थीक | एहि मान्यताक अनुसार द्रष्टव्य थीक जे आधुनिक समीक्षा कोण प्रकारे क्रमिक विकसित भेल अछि |

उनैसम शताब्दी मे इंग्लैंडमे हैजलिट, वर्डसवर्थ, शेली एंव विक्टोरिया-युगीन प्रतिष्ठित समालोचक आर्नलडक साहित्यक समीक्षामे जे मानदंड अपनाओल गेल अछि ओ आधुनिक समालोचनात्मक मानदंडसं सामंजस्य नहि राखि सकैछ | कारण जे ओहि युगक परिस्थिति किंवा आधुनिक परिस्थितिमे असमानता अछि | 19म शताब्दी रोमांटिसिज्मक युग छल | काव्य जकाँ समलोचनामे अपन जीवन-कथा, एतिहासिक क्रममे व्यवस्थित प्रष्ठभूमि राखि मूल्यनिर्धारण करब कवि-अलोचकक एक विशेष अंतमुर्खी प्रवत्ति छल जाहि सं ओ लोकनि बहिमुर्खी ज्ञान तथा सत्यक साक्षात्कार नहि कए सकलाह |

समालोचना व्यापक संभावना अठारहम शताब्दी मे भेटैछ | विभिन्न शास्त्रक अनुशीलन परिशीलन कए समालोचक अपन मुक्त मनीषाके बहिमुर्खी सत्यक रज्जुसं बान्हि अपन उत्कृष्ट विश्लेष्णात्मक प्रतिभा चमकाओल |

एलेक्जेण्डर पोप अपन पद्यबद्ध प्रबंधमे द्दष्टिकोण एहि रूपे रखलिंह अछि- "द परफेक्ट जज विल रीड इच वर्क ऑफ विट विध द सेम स्पिरिट एह द आधार राइट्स |

ओ मात्र-साहित्य-सर्जनक द्दष्टि-बिंदु सं ग्राह्य नहि, अपितु हुनक जीवन-दर्शनक रूपमे सेहो ग्रहणीय थीक | पोपक एहि अवधारणासं आधुनिक आलोचक प्रभावित भेल छथि | हुनक एहि मंतव्यक प्रसंगमे प्रभाव अति आधुनिक समालोचक एफ0आर0लिविभ पर परिलिक्षित होइत अछि, जिनक कथन थीक- "ऐन आइडियल क्रिटिक इज एन आइडियल रीडर |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समीक्षा-प्रणालीक विभिन्न अंग आंग्ल-साहित्यक समुन्नतिमे सहायक सिद्ध भए रहल अछि |

पाश्चात्य समीक्षा-प्रणालीक एक अंग थीक-शास्त्रीय आलोचना जकर श्रेष्ठ समर्थक आंग्ल साहित्यक उनैसम शताब्दीक उत्तराद्धमे सर क्वीलरकाउच, प्रो0 सेंटसबरी भए चुकल छथि | एहि समीक्षा-पद्यतिक सद्धान्तानुसार आलोचक शास्त्रीय नियमक आधार पर काव्यक समीक्षात्मक विवेचना करैत छथि | आधुनिक समीक्षा-प्रणाली मे एहिके प्रोत्साहित नहि कएल गेल अछि | समयक परिवर्तनक अनुसार समीक्षा-प्रणालिक व्यापकता निमित्त तुलनात्मक आलोचना आरम्भ कएल गेल | ई प्रणाली ज्ञानवर्धक आ लोकोपयोगी होइछ | शास्त्रीय आलोचनामे कट्टरता अधिक मात्रामे प्राप्त होइछ जे यदा-कदा उपस्थित करैछ काव्यक लोकोत्तर आनंदक प्रेषनीयतामे व्यवधान | परन्तु तुलनात्मक समीक्षामे सरसता एंव उपयोगिता विशेष होइछ | आलोचक एहि पद्ध्यतिक अनुसार कोनो कविक काव्यक गुण-दोषसं तुलना कएल जाइछ जाहिंसं न्यायक रक्षार्थ कोनो प्रयास बाकी नहि रहि जाइछ | पाठकके बोधगम्य होएबामे किछु जटिलता भले बुझि पडिंह मुदा बुझलाक पश्चात आनंदसागरमे निमग्न भेने बिनु कथमपि रहि नहि सकैत छथि |

तुलनात्मक समीक्षा ड्रायडनसं विशेष-प्रथम प्राप्त कएलक | प्रो0 सेंटस्सब्रीक ध्यान सेहो एहि दिशि विशेष रूपसं आकृष्ट भेल | हुनेक मत-थीक "कमपैरेटिभ मोड ऑफ़ क्रिटिसिज्म इज द हाईएस्ट मोड ऑफ़ जजमेंट |" ओ इलियट महाशयक कथनसं "कोम्पेरीजन एंड कंट्रास्ट आर द चीफ टूल्स ऑफ़ क्रिटिसिज्म" सं समता रखैत अछि | परंच प्रो0 सेंटसबरी सं अत्यधिक विश्लेष्णात्मक प्रतिभा इलियट महाशयमे द्दष्टिगत होइछ |

एतिहासिक समालोचक पद्ध्यति सम्प्रति बहिष्कृत भए गेल अछि | यावतपर्यंत ई पद्यति प्रचलनमे छल, तावत धरि आलोचक धार्मिक, सामजिक, आर्थिक आ राजनीतिक पारिस्थितिक प्रष्ठभूमिमे आलोचना करैत छलाह तथा देखबैत छलाह जे कोनो कवि ओहि सं प्रभावित भए काव्य-रचना द्वारा पाठकसं तादाम्य सम्बन्ध जोडैत छलाह | किलएन्थ बुक्स, जे "मॉडर्न पोएट्री एंड द ह्डीसन" लिखने छथि ओ तथा हर्बर्टरीड़क "वर्ड्सवर्थ" नामक पोथी एतिहासिक समीक्षा-सिद्धांत पर आधारित नहि-अछि, ओ त आलोचना-जगत विशिष्ट उपलब्धि थीक |

मनोवैज्ञानिक आलोचना तथा दार्शनिक सत्यक समन्वय उनैसम शताब्दिक मूर्द्धन्य समालोचना कोलरिज छलाह | हुनक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तक प्रभाव सम्प्रति डा0 आइ0 ए0 रिचर्ड्स पर परिलिक्षित होइछ | मनोविश्लेषक प्रवात्तर्क आधुनिक युगमे फ्रायड एंव युंग महाशय थिकाह | हिनक सिद्धांत वर्तमान समीक्षा-जगतमे क्रांति मचा देखल अछि | एहि क्रांतिकारी समीक्षा-सिद्धान्तक वेगमे, सैधांतिक समीक्षाक जगतप्रसिद्द प्रवात्तर्क प्लेटो आ अरस्तु समीक्षा सम्बन्धी सिद्धांत विरोध ओ अवरोध उपस्थित कए रहल अछि |

हमरा जनतबे मनोविश्लेश्नात्मक समीक्षाक भविष्य उज्जवल छैक | एहि प्रक्रियामे कविक रचना पर मुख्यत: समस्त परिस्थिति आ तज्जन्य प्रतिक्रिया, जे कविक भावोद्वेगके जन्म दैत छैक | अपन अधिकाँश प्रभाव रखैत अछि |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वर्त्तमान युगक शंखनाद श्रवण कए समालोचक प्रगतिवादी आलोचना आरम्भ कएल जकर जन्म रूसमे मक्सिम गोर्की देलिंह एंव जकर प्रवात्तर्क छलाह क्लाडवेल | इहो अपन धूम मचौने रहल, किन्तु मनोवैज्ञानिक समीक्षा युगक अति नवीन क्रांतिकारी उपलब्धि थीक |

किन्तु अधपर्यंत जतबा समालोचक आंग्ल साहित्यमे भेल छथि, हुनक मध्य ध्रुवतारा सद्रश सर्वाधिक देदी प्यमान नक्षत्र रूपमे अनुवर्त्तमान थीक इलियट जनिक प्रभावसं कुरुचिपूर्ण, पक्षपातजन्य समालोचना बहिष्कार भए रहल अछि | हिनक सम्पूर्ण समालोचना-क्षेत्र मे प्राचीन परम्पराक लोकोपयोगी अंश, बहिमुर्खी स्वीक्रत मान्यता आ सत्यमे सन्निविष्ट भए जगजियार भए रहल अछि |

**भारतीय आलोचना-सिद्धांत :**

जाहि प्रकारें पश्चिमी समालोचनाक चर्चा होइछ, ताहि प्रकारे भारतीय आलोचनाक चर्चा नहि कएल जा सकैछ, कारण एहिठाम दू सहस्त्र वर्ष धरि निरंतर एकर विकास ओ अभिवृद्धि होइत रहल अछि | जे सिद्धांत पश्चिम मे स्पष्ट रूपसं आइ बनल अछि ओ भारतमे "काव्य-प्रकाश" एंव "ध्वन्यालोक"क समयहिमे बनि चुकल छल | आजुक निर्णय अछि "मैटर", मैनर रीति एंव आइडियलाइजेशन आदर्शीकरण | एहि तीन तत्त्वके आधार बनाए काव्यालोचन कएल जाइछ | भारतीय साहित्य-शास्त्रक सिद्धांत की थिक ? अर्थ, शब्द एंव रस- एहि तीन केर द्दष्टिसं काव्यके परखबाक चाही तीनूक क्रमसं तुलना कएला पर कोनो विशेष अंतर नहि देखबामे अबैछ |

आदर्शीकरण विषयके लोक पश्चिमी साहित्य-शास्त्रक उपज कहैत छथि, किन्तु विचार कएला पर स्पष्ट भए जाइछ जे रसक प्रतिपादनमे आचार्य एहूसं अधिक बात कहि देने छथि | यदि कल्पना पर विचार कएल जाए तं ई द्दष्टिगत होइछ जे एहूठाम कल्पनाक विवेचन भेल अछि, किन्तु प्रतिभाक नाम पर प्रतिभाके आचार्यगण दू भेद कएलनि अछि-कारयित्री एंव भावयित्री |

एहि प्रकारे जे रुचि एंव तामान्य भावनाक विशेषता बताओल जाइछ सेहो हमरा ओहिठाम विद्यमान अछि | किछु लोक मैथ्यू आरातल्दक जीवनसं संबंधित विषयके आधुनिक आलोचनाक बहुत विशेषता बतबैत छथि, किन्तु हमरा ओतए सं सेहो ई स्वीकार्य भेल अछि, जे काव्यक प्राण थीक पुरुषार्थ | एकरहि अतिरेक ओ दुरूपयोग होएबासं धर्मशास्त्र; कामशास्त्र एंव अर्थशास्त्र आदि पढ़ी कए काव्यक प्रणयन होमए लागल छल | एक आओर महत्त्वपूर्ण विशेषता आधुनिक ई थीक जे ई नियमक अपेक्षा सिद्धान्तक अधिक मान करैत अछि | भारतमे सेहो इएह बात छल | एतय नियमक अपेक्षा सिद्धान्तक समादर विशेष होइछ अछि |

एहि प्रकारे हम एहि बातक दिग्दर्शन कए सकैत छी जे आधुनिक आलोचना एंव भारतक प्राचीन अलोच्नामे समन्वय भए सकैछ, दुनूमे समन्वय की अभेध देखबाक यत्न करब आओर अधिक श्रेयस्कर होइत | आइकालिह प्राचीन आलोचना अर्थ लेल जाइछ | एहि सं भिन्न यूनान आ रोमक रूपप्रधान आलोचना | एहि सं प्राय: कतोक छात्र भारतक आलोचना-पद्यतिके सेहो प्राचीन आलोचनाक नाम पर अपूर्ण आ अयुकित बूझए लगैत छथि

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

| यदि ओ अलंकार, रितिक, गुण, रस, ध्वनी आदी समालोचना-ग्रंथक रसास्वादन करथि तं स्पष्ट विदित भ जएतिहीं जे सत्य साहित्यक कतेक अध्यन भेल छल |

भारतमे सिद्धांत ओ व्यवहार दुनूक पर्याप्त उदाहरण उपलब्ध थीक | उपरवर्णित चारि प्रकारक आधुनिक आलोचनाक सिद्धान्तक सन्दर्भमे भारतमे तं विश्वविख्यात अछिहे | साधारण अध्येता सेहो आचार्य भामहक "काव्यालंकार"1, दंडीक "काव्यदर्श", मम्मतटक "काव्यप्रकाश"3, आनंदवर्धनक "ध्वन्यालोक"4, विश्वनाथक "साहित्यदर्पण"5, राजशेखर "काव्यमीपांसा"6 आदिक नामसँ अभिज्ञ रहैछ |

एहि प्रकारे निर्णयात्मक समालोचनाक उदाहरण टीका ओ व्याख्यान सभमे प्रचुर मात्रामे भेटैछ | व्याख्यात्मक आलोचना सेहो भारतमे विशेष परिणाममे भेल अछि | वृत्ति, भाष्य आदि आओर अछिये की ? एतय स्वतन्त्र आलोचना सेहो होइत रहल, परंच से अन्य रूपमे | एकर अधिक प्रयोग विभिन्न शास्त्रमे होइत छल | शास्त्रक स्रजन भेलापर केओ वृत्ति केर प्रणयन करैर छल आ केओ ओहि पर स्वतंत्र प्रबंधक सृजन | साहित्य एंव काव्यक क्षेत्रमे एहन आलोचना प्रायशः नहि होइत छल, आचार्य क्षेमेन्द्र सद्रश लेखक टिपण्णी लिखी दैत छलाह, जेना भासो भास: कविकुलगुरु कालिदासो विलास इत्यादि |"

एहि प्रकारे आलोचनासे परिपूर्ण स्वतंत्र उक्ति वैभिन्य भारतीय साहित्य मे अधवधि खूब चालित अछि |

**उदाहरणस्वरुप –**

1. उपमा कालिदासस्य भारवेरथ्रगौरवम |

दंडीन: पदलालित्य माधे सन्ति त्रयो गुणा: ||

2. वाणोंइछष्ट जगत्सर्वम |

संस्क्रत विद्वान् वाड मयक दू भेद कएने छथि –

1. काव्य तथा
2. शास्त्र |

आलोचना "शास्त्र"क अंतर्गत मानल जाइछ | एहि कारणे आलोचनाक अन्य अनेक भेदके जानबाक हेतु हमरा सभके "शास्त्र-निर्देश"2 सद्रश प्रकरण सभ पर विचार करबाक चाहि | ओतए सूत्र, वृत्ति, टीका, भाष्य, समीक्षा, विवेचन, वार्तिक आदि सभक विचार भेटैत अछि |

**आचार्यक आलोचना – रीति :**

प्रो0 रमानाथ झाजी केर अवदान मैथिली-आलोचना-क्षेत्रमे स्ताव्य रहल अछि | जाहि कोनो रचनाकारक कर्तिके ई स्पर्श कएलइन्ह, ओकरा स्वर्णवत चमका देलिंह | कोनो विषयमे गुरुता वावतधरि नहि अबैछ यावत कि ओकर गुण-अवगुणक विवेचन नहि होइछ | दोष-निवारणसं रचना परिष्कृतिमे सबलता अबैछ, सहायता भेटैछ | रमानाथ बाबू एहि मर्मके नी कजेका जनैत-बुझैत छलाह | तखनहि अपन परिमार्जित शैली मे विद्वान् सभक कर्तिक स्वागत करैत नीर-क्षीर विवेकक शरण लेल | कोनो स्थल पर ई पूर्वाग्रहग्रस्त नहि भेलाह |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

देखार नहि भेलाह | कोनो व्यक्तिविशेषक प्रति ई कखनो कमजोरी नहि रखलिन्ह, पक्षपात नहि केलिंह | जनिक रचनामे जे पाओल जाइछ, जकर रचनाक जे गुण-दोष छल, तकर उदघाटन कए विकासक मार्ग प्रशस्त कएल |

आलोचना की थीक, एहि विषयके जानबाक लेल रमानाथ बाबू पाश्चात्य भारतीय दुनू रीतिके अपनओलिन्ह | एक दिशि जं पोप, अरस्तु, मैथ्यू अर्नाल्ड ओ हडसन सं प्रभावित भेलाह तं दोसर दिशि आचार्य क्षेमेन्द्र, भामह, विश्वनाथ ओ मम्मट आदिक क्रतित्त्व सेहो स्वागत करैत ओकर पारायण गंभीरताक संग कएल आ तखन तुलनात्मक रीतिसं दुनूक अध्यन कए मैथिली-आलोचनाक दशा-दिशा देखैत एहिमे सुणर आनबाक प्रयास कएल | भूमिका-लेखन जीवनी, संस्करण किंवा स्वतन्त्र निबंध आदिमे हिनक आलोचनाक स्वरुप देखबामे अबैछ |

रमानाथ बाबू आलोचना करैत काल राजशेखरसं प्रभावित भए लिखने छथि- “राजशेखर कहने छथि जे जहिना काव्यक कारण प्रतिभा थिकैक ओ

साहित्यसर्जनामे कारण-भूत प्रतिभा “कारयित्री” प्रतिभा थिक, तहिना काव्य-क्रतिक परिक्षणहुक हेतु प्रतिभा चाहि जकरा ओ “भावयित्री” प्रतिभा कहैछ | परन्तु जेना प्रतिभाक तंग-संग व्युत्पत्ति ओ अभ्यास सत्साहित्यक कारण मानल जाइत अछि तहिना भावयित्री प्रतिभाक संग-संग कतोक आओर गुण अपेक्षित छैक जे समीक्षाके शास्त्रीय मर्यादा प्रदान करैत अछि | समीक्षा क्रियाक हेतु सबसं विशेष प्रयोजन छैक ओहि हेतु विशेष प्रकारसं संबद्ध होयबाक अर्थात स बसं पहिने हुनका गंभीर अध्यन कएने समीक्षाक क्रिया अनभिज्ञता देखाय समीक्षाके उपहासास्पद बना देत | ताहि संग निष्पक्षता समीक्षाक आत्मा थिक | समीक्ष्य विषय-वस्तुक संग समीक्षक सहानुभूति आवश्यक छैक, पुदा से सहानुभूति रचनासं हो, रचनाकारसं नहि, ओ ते राग वा द्वेष सं प्रेरित समीक्षा समीक्षा नहि थिक | तहिना सौन्दर्य-भावनाक संस्कार एक स्वतन्त्र वस्तु थिक जकरहि हम भावयित्रा प्रतिभा कहल अछि ओ ताहि संग अभिव्यक्ति-कौशल सेहो ओहि प्रतिभाक प्रसाद थिक | एहि कौशलक अंतर्गत पाच गोट विचार अबैत अछि- ओ जे कहैत छथि से स्पष्ट अछि, शुद्ध अछि, प्रभावशाली अछि, युक्तियुक्त अछि ओ समीक्षाक शैलीसं भिन्न नहि अछि | समीक्षाक संस्कारमे एहि पाँचो गुणक सत्ता आवश्यक |

आचार्यप्रवर निष्णात आलोचक छलाह | हुनक कथन छल- - “कोन्हु रचनाक सम्यक रूपसं दर्शन ओ परीक्षण क दोसराके ओकर गुण एंव दोषक विवरण देब, जोही दिशि प्रवत्त कएब, ओहन रचना करबाक हेतु दोसराके प्ररित कएब, जनताक रुचिके परिमार्जित कएब, ओहन रचना करबाक हेतु दोसराके प्रेरित कएब, जनताक रूचिके परिमार्जित कएब, इऐह सब भेल समीक्षाक प्रयोजन, परन्तु से तखनहि संभव भ सकैछ जखन हम ओहि रचनाक उचित गुण-तत्त्व जानि ली, ओकर मूल्यांकन क सकी | अतएव आवश्यक ई थिक जे मूल्यांकन सरूप स्थिर हो, कोन मानदंड से कोन रचनाक परीक्षण कयल जाएत से स्पष्ट हो | कोन्हु रचनाक गुण-तत्त्व वा मूल्य ओ विशेष नियोजन थिक जे ओहिमे अपस्थित भ ओकरा मूल्यवान, महत्त्वपूर्ण, गुनान्वित क ओकरा एहि योग्य बना दैत अछि जे ओहि दिशि लोकक ध्यान विशेष रूपसं आकृष्ट हो | लेखक द्वारा प्रयुक्त वा स्थापित इऐह गुण-तत्त्व थिक जे श्रोता, पाठक व दर्शकके आदि सं अंत धरि ओहिमे संलग्न रखने अछि, मन ऊब नहि दैत अछि |

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

साहित्यक आनंद ओहिमे अन्तर्हित सुन्दर, अदभुत, ओ असाधारण वस्तु, व्यक्ति, क्या किंवा भाषाक एहन नियोजन होइत अछि जे पाठक, श्रोता, किंवा दर्शक कोतूहलसं ओहिमे तन्मय भ कतहु भाषा-शैली स, कतहु वर्ण्यविषय सं, भावित होइत चल जाथि, तखन बुझबाक थिक जे ओहिमे गुण-तत्त्व विद्यमान अछि |"

**References:**

*साहित्य-समीक्षा पंचम भाग- अ0भा0मै0सा0 सम्मलेन, दरभंगा |*
*काव्यादर्श- दंडी |*
*साहित्यालोचना- डा0 श्यामसुंदर दास*
*संकलन- मैथिली अकादमी, पटना |*
*काव्यालंकार- भामह*
*काव्यप्रकाश- मम्मट*
*ध्वन्यालोक- आनंदवर्धन*
*साहित्यदर्पण- विश्वनाथ*
*काव्यमीमांसा- राजशेखर*

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*